1938A Two views of life (incomplete)

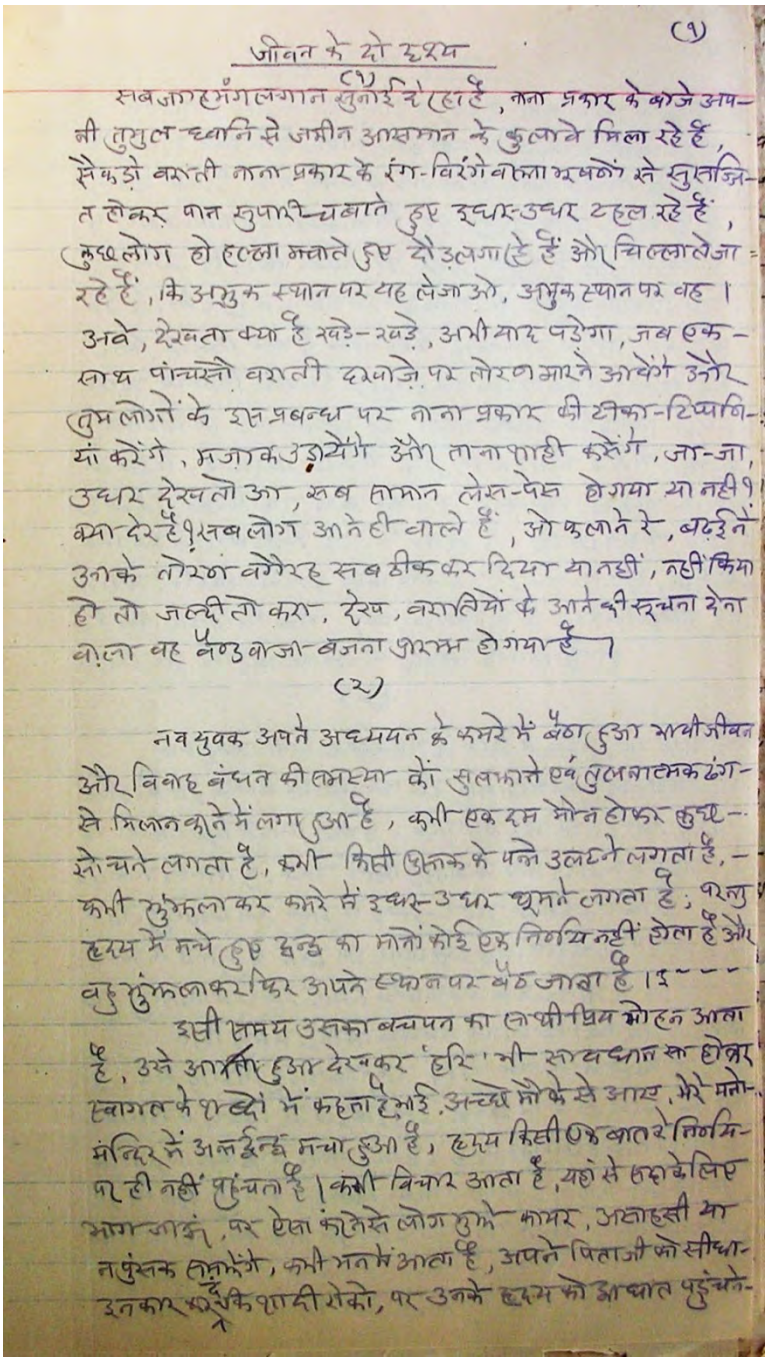

जीवन के दो दृश्य

(1)

सब जगह मंगलगान सुनाई दे रहा है, नाना प्रकार के बाजे अपनी तुमुल ध्वनि से जमीन आसमान के कुलाबे मिला रहे हैं, सैकड़ों बराती नाना प्रकार के रंग-बिरंगे वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर पान सुपारी चबाते हुए इधर-उधर टहल रहे हैं, कुछ लोग हो हल्ला मचाते हुए दौड़ लगा रहे हैं और चिल्ला रहे जा रहे हैं, कि अमुक स्थान पर यह ले जाओ, अमुक स्थान पर वह। अबे, देखता क्या है खड़े-खड़े, अभी याद पड़ेगा, जब एक साथ पांचसौ बराती दरवाजे पर तोरण मारने आवेंगे और तुम लोगों के इस प्रबन्ध पर नाना प्रकार की टीका-टिप्पणियां करेंगे, मजाक उड़ायेंगे और तानाशाही करेंगे, जा-जा, उधर देख तो आ, सब सामान लेन-देन हो गया या नहीं? क्या देर है? सब लोग आने ही वाले हैं, ओ कल्लाने रे, बढ़ई ने आके तोरण वगैरह सब ठीक कर दिया या नहीं, नहीं किया हो तो जल्दी तो करा, देख, बरातियों के आने की सूचना देने वाला वह बैण्ड बाजा बजना प्रारम्भ हो गया है।

(2)

नवयुवक अपने अध्ययन के कमरे में बैठा हुआ भावी जीवन और विवाह बंधन की समस्या को सुलझाने एवं तुलनात्मक ढंग से मिलान करने में लगा हुआ है, कभी एक दम मौन होकर कुछ सोचने लगता है, कभी किसी पुस्तक के पन्ने उलटने लगता है, कभी झुंझला कर कमरे में इधर-उधर घूमने लगता है; परन्तु हृदय में मचे हुए द्वन्द्व का मानो कोई एक निर्णय नहीं होता है और वह झुंझलाकर फिर अपने स्थान पर बैठ जाता है। ~ ~ ~

इसी समय उसका बचपन का साथी प्रिय मोहन आता है, उसे आर्त हुआ देखकर 'हरि' भी सावधान सा होकर स्वागत के शब्दों में कहता है भाई, अच्छे मौके से आए, मेरे मनो-मन्दिर में अन्तर्द्वन्द्व मचा हुआ है, हृदय किसी एक बात के निर्णय पर ही नहीं पहुंचता है। कभी विचार आता है, यहां से कहीं के लिए भाग जाऊं, पर ऐसा करने से लोग मुझे कायर, असाहसी या नपुंसक समझेंगे, कभी मन में आता है, अपने पिताजी को सीधा इनकार करके कि शादी रोको, पर उनके हृदय को आघात पहुंचे-

ने का डर है, क्योंकि एक तो जीवन के प्रारंभ से ही अपनी माता-जी-जायदाद चले जाने से सदमा पाए हुए हैं, उधर मेरी मां को भी मरे हुए पूरे २० वर्ष हो चुके हैं, तभी से वे नाना प्रकार की यातनायें उठाते हुए मेरे जीवन को सुखी बनाने का अथक श्रम उठा रहे हैं, यदि ऐसे अवसर पर उन्हें विवाह की मनाई की जायगी, तो संभव है वे पुनः पागल हो जांय, क्योंकि पहले भी उक्त घटनाओं के घटने पर वे दो बार पागल हो चुके हैं, समझ नहीं पड़ता, क्या करूं, भाई, बताओ तो सही, एक ओर मेरा जीवन संकट में है, दूसरी ओर मेरे पिताजी का। कितनी विकट परिस्थिति है, ओफ् कुछ सूझता नहीं, मैं नहीं समझता था कि इतनी जल्दी यह अवसर आ जायगा !!!

मोहन बोला, तुम तो कहा करते थे, मेरी कहीं सगाई तक भी नहीं हुई है, मेरे बड़े भाई का कहना है कि हरि की शादी उसे पढ़-लिख जाने पर किसी सुयोग्य कन्या से करेंगे, क्या जल्दी है? अभी से शादी कर देने से उसका पढ़ना बंद हो जायगा, आदि। पर यह अचानक में क्या हो गया?

हरि,— इसी चक्कर में तो मैं हूं, अभी होली पर तो मैं घर गया ही था, तब तक मेरी शादी का जिक्र तक न था, हां बड़े भाई की लड़की के विवाह की अवश्य तैयारियां हो रही थी. कल ही तार से यह सब पता चला है, समझ नहीं पड़ता, क्या करूं?

मोहन - भाई, उम्र तो तुम्हारी भी पूरी २० की हो चुकी है, इधर पढ़ना भी समाप्त ही है, फिर तुम्हारे भाई तो बड़े समझदार गिने जाते हैं, पिताजी ने उनसे पूछे बिना कुछ ~~कोई~~ थोड़े ही सम्बन्ध जोड़ा होगा?

हरि, सो तो ठीक है, मेरे पिताजी तो मेरी मां के स्वर्गवास के दिन से ही कुछ नहीं करते हैं, सारे कर्ता-धर्ता मेरे बड़े भाई ही हैं। उनसे मैं आशा तो अच्छी ही करता हूं, क्योंकि सबसे छोटा भाई होने के कारण मैं उनका अति प्यारा हूं, परन्तु न जाने क्यों. हृदय इसे मंजूर करने की स्वीकृति नहीं देता!

मोहन - कुछ भी हो, परिस्थिति को देखते हुए यही उचित प्रतीत होता है कि तुम विवाह मंजूर कर लो, और तुरन्त ही एक मन्द—

(possibly a page is missing here)

लीला अपनी सहेलियों से घिरी बैठी है, खूब हंसी मजाक चल रहा है, लीला उबटन कर रही है, मालिन फूल माला लिए सामने खड़ी है, गावज ढोली वगैरह बाजे रखे पता नहीं क्या करने को खड़ी है कि एक सहेली बीच में ही बोल उठती है —

कहो, अब तो मन की मुराद पूरी हुई, सुना है — बिलकुल तुम्हारी ही हमजोली के हैं, तू १६ की है और वे २० के सुनते हैं, जैसी शरीर से तू है वैसे ही स्वस्थ तगड़े और प्रसन्न बदन उन्हें भी तो सुना है।

दूसरी — तब तो भगवान ने तुम्हारी .... की अच्छी जोड़ी जोड़ी है, आखिर, इसने भगवान को भी पता नहीं, कब से माला फेर फेर कर बस में कर रखा है।

तीसरी — देखो जी, अपने सामने तो ये भोली भाली बनती थी कि मैं तो इन बातों में जानती भी नहीं, कभी कुछ सोचा भी नहीं, भला बताओ तो, बिना कुछ किये धरे, बिना भगवान के मनाए ऐसा सुन्दर जोड़ा मिल सकता था।

पहली, अरी तू, इसे भोली समझती है, भीतर ही भीतर घुला करती है और ऊपर से अपने को ये स्वांग दिखाती है।

दूसरी — पहली की ओर लक्ष्य कर, हां तू ठीक कहती है, यदि ऐसा न होता तो कल मेरे से क्यों कहती कि जेवर तो बहुत बढ़िया चढ़ाया गया है। भला वे न पसन्द पड़े होते, तो उनकी ओर से भेजी हुई गहनों की पिटारी ले क्या, उनको भी बिसराते और कुबेर की सम्पत्ति को भी लात मार देती।

तीसरी — हां, बहन तूने ठीक कहा, उस दिन इसके बहनोई के छोटे भाई ने जरा मजाक में जो हाथ पकड़कर चोटी की डाबी में पान रख दिया, तो इसने क्रोधित हो कर उसे फटकार कर दे मारी और न जाने क्या क्या कहती हुई घर में जा घुसी तो तीन दिन तक किसी को दिखाई न दी।

लीला — झल्ला कर बोली, ये निगोड़ियां और न जाने, कहां से आ बैठती हैं और व्यर्थ की बातें बककर दिमाग खाती रहती हैं, इतना तक भी नहीं देखती कि सामने से मां आ रही है।

इतना सुनते ही तीनों एक साथ बोल उठीं, और जब-

next page(s) missing